ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 24th Feb 2018, **Revised** on 17th Mar 2018; **Accepted** 27th Mar 2018

शोध पत्र

सामुदायिक रेडियो शिक्षण की संभावनाएं, कक्षा शिक्षण के पूरक के रूप में

* **डॉ0 धर्मपाल सिंह**, शोध निर्देशक एवं **श्योप्रकाश**, शोधार्थी
शिक्षा संकाय, ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई) संगरिया
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
Email: spgoswamibodla@gmail.com, Mob. - 9461825177

मुख्य शब्द – *सामुदायिक रेडियो, कक्षा शिक्षण, रेडियो शिक्षण आदि।*

सारांश

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है। अधिगम प्राप्ति में सूचना तंत्र का योगदान महत्वपूर्ण है। शिक्षण कार्य को रोचक बनाने के लिए अपने साधनों का प्रयोग वर्तमान में हो रहा है, जिसमें मल्टीमीडिया की भूमिका भी है। वैज्ञानिक खोज नित नई दिशा में अन्वेषण करते हुए इस कार्य में मददगार साबित हो रही है। मोबाइल, दूरदर्शन, कम्प्युटर, रेडियो, इंटरनेट आदि का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जार रहा है। ये साधन अपने–अपने रूप में काफी उपयोगी साबित हुए हैं। रेडियो का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में काफी समय से हो रहा है वही अन्य साधनों के विकास के कारण, इसकी प्रासंगिकता का प्रश्न भी उठता है। भारत सरकार ने वर्ष (2002) में रेडियो को नये रूप में सामुदायिक रेडियो के लिए पहल शुरू की। शिक्षण संस्थानों में सामुदायिक रेडियो स्थापित किये जा रहे है। यह नया रूप शिक्षण में उपयोगी है। इसी को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने इसे अपने अध्ययन में शामिल करते हुए तुलनात्मक अध्ययन करना सुनिश्चित किया। परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण विषय पर अध्ययनकर्ता ने पाया कि यह कक्षा शिक्षण के पूरक के रूप में उपयोगी साबित हो सकता है।

प्रस्तावना

शिक्षा वर्तमान अर्थशास्त्र में जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में अपना स्थान रखती है। रोटी, कपड़ा और मकान की अवधारणा से अब हम आगे बढ़ चुके हैं। हमारे समाज का अस्तित्व शिक्षा द्वारा निर्धारित हो रहा है। बाल मन एक खाली कैनवास की तरह है जिस पर शिक्षा द्वारा रंगों का मेल बढ़ाया जाता है। आज का समाज सूचना, ज्ञान व जागरूकता द्वारा अपना स्थान निर्धारित कर रहा है। शिक्षा इन सबमें निहित है। वर्तमान युग सूचना क्रान्ति का युग है। सूचना व संचार माध्यमों से सम्पूर्ण विश्व एक परिवार की भांति नजर आ रहा है। हालांकि आदिकाल से ही मनुष्य अपने विचार, भावनाएं, ज्ञान अनुभव आदि अभिव्यक्त करता आया है। ज्ञान प्रसार एवं विचाराभिव्यक्ति के साधन मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं में बदलते आए हैं विकास की इस प्रक्रिया में सूचनातंत्र का तेजी से विकास हुआ है। आज विज्ञान व तकनीक, मानव जीवन के हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

संचार एवं संप्रेषण के क्षेत्र भी इससे गहरे तक जुड़े हैं। ज्ञान प्रदान करने एवं ग्रहण करने का प्रचलित माध्यम 'कंठ विद्या' ही रहा है। वैज्ञानिक खोजों की उपलब्धि में संचार माध्यमों द्वारा इसे नवीन स्वरूप मिला है। सूचनाओं के प्रसारण वृहद स्तर पर करने के लिए बहुआयामी साधनों का प्रयोग मिल जाता है। सूचना प्रसारण, शिक्षा और अनुदेशन के क्षेत्र में

वर्तमान में अनेक संचार माध्यमों कार्यक्रमों में उपयोग हो रहा है। ये प्रमुख माध्यम इस प्रकार हैं– टेलीफोन, मोबाईल, इंटरनेट, ई–मेल, टेली प्रिन्टर, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, रेडियो इत्यादि।

सूचना के आज के युग में रेडियो सशक्त सूचना माध्यम के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। जनसंवाद व शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो अपने जन्म के सवा सौ साल बाद भी लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण साधन है। इसकी प्रांसगिकता का प्रमाण है माननीय प्रधानमंत्री 'नरेन्द्र मोदीजी' का 'मन की बात' कार्यक्रम, जो 03 अक्टूबर 2014 से नई दिल्ली से शुरू हुआ और आज तक लोकप्रियता की बुलंदियो के साथ चल रहा हैं। वहीं शिक्षा के क्षेत्र में अधिगम को सरल प्रभावी एवं बोधगम्य बनाने के लिए रेडियो, टेलीविजन जैसे साधनों का उपयोग इग्नू, एन.सी.आर.टी., राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय आदि में किया जा रहा है।

हमारे देश में वर्ष 1927 में रेडियो का विधिवत प्रसारण शुरू हुआ। हालांकि इससे पहले 1924 में ही ब्रिटेन में शैक्षिक पाठों के प्रसारण की शुरूआत हो चुकी थी। वहीं भारत में स्कूली शिक्षा के पाठों का प्रसारण सन् 1938 से प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में एफ.एम. (फ्रिक्वेंशी मॉड्यूलेशन) तकनीक द्वारा रेडियों नये रूप में हमारे सामने है। इसमें समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने वर्ष 2002 में नयी पहल की तथा 01 फरवरी 2004 को भारत का पहला सामुदायिक रेडियो केन्द्र अन्ना एफ.एम. शुरू किया गया। तब से लेकर आज तक अनेक सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की शुरूआत हुई।

राजस्थान में भी कुछ उद्देश्यों जैसे– शिक्षा, महिला सशक्तीकरण आदि को लेकर सामुदायिक रेडियो चैनलों की शुरूआत की गई। जिसमें प्रमुख सामुदायिक रेडियो इस प्रकार है–

1. आपणों रेडियो – वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली।
2. रेडियो–7– मानसरोवर, जयपुर।
3. एनीमेंट सामुदायिक रेडियो केन्द्र डिग्गी, मालुपरा टोंक।
4. रेडियो मधुबन, माउंटआबू।
5. तिलोनियां रेडियो अजमेर।
6. अलवर की आवाज–इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नॉलोजी, अलवर।
7. कमलवाणी सामुदायिक रेडियो स्टेशन, कोलसिया, झुन्झनू।

जैसा कि इन सामुदायिक रेडियो केन्द्रों का उद्देश्य शैक्षणिक व सामाजिक प्रसारण है। तथा ये अपने आस–पास के समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए जागरूकता कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। कमलवाणी सामुदायिक रेडियो स्टेशन से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की प्रवृति व विषय–वस्तु शैक्षणिक व सामाजिक जागरूकता होने को ध्यान में रखते हुए इसके शैक्षिक प्रभावों को जानना जरूरी हो जाता है। इसी बात से प्रभावित होकर अनुसंधानकर्ता ने सामुदायिक रेडियो से पाठ प्रसारण व परम्परागत कक्षा शिक्षण के बीच प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना सुनिश्चित किया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

ज्ञान प्रसार की आवश्यकता एवं इसके महत्व को जानते हुए, हमें इस बात का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है कि मनुष्य की वर्तमान आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान से आगे बढ़ चुकी है उसमें शिक्षा की आवश्यकता को भी शामिल किया गया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अनुदेशन के तरीके बदल रहे है। अधिगम प्रभावी बनाने के लिए

नये–नये साधन प्रयुक्त किये जा रहे है। सूचना क्रांति के कारण यह और अधिक सरल होता जा रहा है। मनुष्य के स्वस्थ विकास हेतु वैज्ञानिक खोज, नये साधन, उपलब्ध करवा रही है। एक समय था जब बालक गुरू के सानिध्य में सब कुछ सीखता था। कंठ विद्या ज्ञान–प्रसार का माध्यम रही है। अनेक बदलावों के फलस्वरूप शिक्षा प्रदान करने के तरीके भी बदले है। वर्तमान में अनेक साधनों का उपयोग एक साथ व अलग–अलग रूपों में भी किया जा रहा है, यह वर्तमान की आवश्यकता भी बन गया है, क्योंकि शिक्षा अपने व्यापक रूप में इन बदलावों को नकार नहीं सकती। फिर सूचना तंत्र जब ज्ञान–प्रसार में मदद कर रहा है तो यह एक साथ प्रत्यक्ष शिक्षा या अन्य रूपों में भी उपयोगी है। मानव सभ्यता के विकास में तथा शिक्षा प्रदान करने के तरीकों में भी इसकी उपयोगिता है। जब सूचना तंत्र या इसके साधनों की बात आती है तो रेडियो का नया प्रारूप सामुदायिक रेडियो वर्तमान में हमारे लिए अध्ययन का विषय बन जाता है। अनेक साधनों में से एक यह सर्व–सुलभ, सस्ता एवं ज्ञान सूचना व मनोरंजन की त्रिवेणी के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत है। अतः इसे अध्ययन विषय के रूप में शोधकर्ता ने चुना है जो महत्वपूर्ण तो है ही साथ ही हमारी स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला भी हो सकता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

गिल, तारासिंह (2008) ने कम्प्युटर शिक्षा के प्रति माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे, कम्प्युटर शिक्षा के प्रति माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कम्प्युटर अभिवृतियों का अध्ययन करना। सामाजिक आर्थिक स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति अभिवृतियों का अध्ययन करना। शोध अध्ययन के परिणामों में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की कम्प्युटर शिक्षा के प्रति अभिवृति अधिक सकारात्मक रही।

बंडर, डेविड (2009) ने रेडियो आधारित कार्यक्रम द्वारा प्रतिभागियों की शैक्षिक निष्पति चुनौतियों का उच्च स्तरीय अध्ययन विषय पर शोध कार्य करते हुए अपने परिणामों में पाया कि–रेडियो आधारित कार्यक्रम स्वरूप शिक्षा सैकण्डरी केन्द्रित तथा महाविद्यालयी अध्ययन प्रभावित हुआ। अपवर्ड बाउण्ड कार्यक्रम प्रतिभागियों की शिक्षा रोजगार केन्द्रित करता है। यह अध्ययन केवल ऑकडें प्रदान करने का कार्य नहीं करता। बल्कि स्थानीय व्यवसायों के प्रति भी भाग लेने वालों का ध्यान केन्द्रित करता है।

रहमान, बजलर (2013) ने बांग्लादेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का अध्ययन किया। इन्होंने शोध अध्ययन के परिणामों में पाया कि 14 सामुदायिक रेडियो स्टेशनों द्वारा ग्रामीण समुदाय के लक्ष्य सुनिश्चित करने के लिए सशक्तीकरण एवं जागरूकता संबंधी कार्यक्रम प्रस्तावित किये जा रहे है। ग्रामीण क्षेत्रों में युवा लोग एवं महिलाएँ कार्यक्रम प्रसारकों के रूप में इन सामुदायिक रेडियो स्टेशनों पर काम कर रहे हैं तथा एक प्रकार से यह रेडियो केन्द्र मौन लोगों की आवाज के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

शंकर, रवि (2014) ने सामुदायिक रेडियो और भारतीय परिदृश्य– एक अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य था, राष्ट्र के विकास में सामुदायिक रेडियो की भूमिका जानना। शोध परिणाम में पाया कि सामुदायिक रेडियो ज्ञान के संचालन के माध्यम से विकास संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह सामान्य लोगों को अच्छे जीवन जीने की कुशलता प्राप्त करने हेतु जागृत करने, शिक्षा क्षेत्र में उच्च स्तर एवं समाज में भेदभाव दूर करने में मददगार साबित हो रहा है। हमारे राष्ट्र की विसंगतियों को ध्यान में रखते हुए यह सामाजिक बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस प्रकार अब तक हुए अध्ययनों के अनुसार शोधार्थी ने पाया कि इस क्षेत्र में अभी पर्याप्त अध्ययन नहीं हुए है तथा पर्याप्त कला शिक्षण तथा सामुदायिक रेडियो का तुलनात्मक अध्ययन अपने आप में नवीन तथा मौलिक है, अतः शोधार्थी ने यह अध्ययन करना सुनिश्चित किया।

समस्या कथन

"परम्परागत कक्षा शिक्षण एवं सामुदायिक रेडियो शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शैक्षिक प्रसारण की दृष्टि से रेडियो का विशिष्ट महत्व है। कक्षा शिक्षण की परम्परागत धारणा में यह कितना रोचक व प्रभावशाली हो सकता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि शैक्षणिक अभिप्रेरणा का भी निष्पति पर प्रभाव पड़ता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं।

1. परम्परागत कक्षा शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों के निष्पति स्तर को जानना।
2. कमलवाणी सामुदायिक रेडियों से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों के निष्पति स्तर को जानना।
3. परम्परागत कक्षा शिक्षण व सामुदायिक रेडियों केन्द्र द्वारा प्रसारित पाठ शिक्षण द्वारा निष्पति की तुलना करना।
4. चरों के अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर सामुदायिक रेडियो शिक्षण की सार्थकता का पता लगाना ।

परिकल्पना

समस्या के चयन के बाद अभिकल्पनाएं निर्धारित की गयी जो इस प्रकार है–

1. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले छात्र अधिक शैक्षिक निष्पति दर्शातें है।
2. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पति अधिक होती है।
3. परम्परागत कक्षा शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों का निष्पति स्तर अधिक होता है।

अध्ययन के चर

1. सामुदायिक रेडियो स्टेशन कोलसिया से पाठों का प्रसारण किया जाएगा। इसे एक नियंत्रित चर के रूप में अध्ययन में शामिल किया गया ।
2. कक्षा कक्ष में परम्परागत शिक्षण को स्वतंत्र चर के रूप में रखते हुए इसकी तुलना में रेडियो शिक्षण का प्रभाव अध्ययन द्वारा देखा जाना है।
3. शैक्षिक रूचि जो बालक के विषय विशेष के प्रति लगाव या पसंद को अभिव्यक्त करती है अन्य मध्यस्थ चर है।
4. शैक्षणिक अभिप्रेरणा बालक के व्यवहार व कार्यों को एक दिशा में निरंतरता प्रदान करने में सहायक है यह भी मध्यस्थ चर के रूप में अध्ययन में शामिल गया है।
5. शैक्षिक निष्पति–बालक अपनी क्रियाओं या कहा जाए कि पाठ्य–क्रियाओं से जो ज्ञान, समझ व कौशल प्राप्त करता है वह उसकी शैक्षिक निष्पति है।

अध्ययन की विधि

शोधकर्ता ने इस अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का उपयोग किया है जिसमें स्वतंत्र चर पर आश्रित चर के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। यह एक वैज्ञानिक विधि है जिसमें शोधकर्ता विषय विशेष के अध्ययन में परम्परागत शिक्षण के स्थान पर रेडियो पाठ शिक्षण को अपनाता है। इसमें दो समूह एक स्वतंत्र तथा दूसरा नियंत्रित बनाया गया है। एक को सामान्य शिक्षण विधि तथा दूसरे को रेडियो पाठों के माध्यम से पढ़ाया जाएगा। समूहों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण की सार्थकता के आधार पर उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली विधि अधिक सार्थक एवं प्रभावी मानी जाएगी।

अध्ययन के न्यादर्श

इसमें कमलवाणी सामुदायिक रेडियो स्टेशन के प्रसारण क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों के कक्षा–7 स्तर के 160 विद्यार्थियों को लिया गया है, इन्हें दो समूहों में बांटा गया।

इन समूहों की विद्यालय स्तर पर की जाने वाली परीक्षाओं के निष्पति परिणामों की तुलना की जाएगी तथा इन परिणामों के आधार पर यह तय हो पाएगा कि सामुदायिक रेडियो से शिक्षण परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में कितना सार्थक है।

अध्ययन का परिसीमन

यह अध्ययन राजस्थान राज्य के शेखावाटी क्षेत्र तक सीमित रखा गया है। शोध अध्ययन में सामुदायिक रेडियो केन्द्र की परिसीमा को ध्यान में रखते हुए रेडियो प्रसारण क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों का चयन किया जाएगा। इस शोध में 11–15 वर्ष तक के उच्च प्राथमिक स्तर के 160 विद्यार्थी शामिल किये गये हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

क.स.	उपकरण का नाम	प्रकार
1.	शैक्षिक रूचि मापनी	प्रामाणिक
2.	शैक्षणिक अभिप्रेरणा मापनी	प्रामाणिक
3.	शैक्षिक निष्पति परीक्षण	अध्यापक निर्मित

मध्यस्थ चरों को समान रखते हुए विद्यार्थियों के निष्पति परिणामों के आधार पर परिकल्पनाओं की जाँच करते हुए अध्ययन में निष्कर्ष निकाला जाएगा।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन से प्राप्त तथ्यों व आंकड़ों का सांख्यिकी विधियों से विश्लेषण कर परिणाम व निष्कर्ष निकाला जाता है प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाप विचलन व क्रांतिक अनुपात मान व अन्य उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधियां प्रयुक्त की गयी हैं।

शैक्षिक निष्पति परीक्षण की सारणी

वर्ग	छात्र		छात्र		संयुक्त विद्यार्थी	
समूह	नियंत्रित	प्रयोगात्मक	नियंत्रित	प्रयोगात्मक	नियंत्रित	प्रयोगात्मक
न्यादर्श	40	40	40	40	80	80
मध्यमान	5.1	6.0	5.0	5.8	5.05	5.9
प्रमाप विचलन	.70	.81	.81	.81	.75	.81
टी.मान	5.29		5.55		6.53	
सार्थकता स्तर	सार्थक / 0.01 पर		सार्थक / 0.01 पर		सार्थक / 0.01 पर	

परिणामों का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या

- नियंत्रित समूह के छात्रों का मध्यमान 5.1 तथा प्रमाप विचलन .70 प्राप्त हुआ वहीं प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 6.0 तथा प्रमाप विचलन .81 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के परिणाम जो अन्तर दर्शाते हैं उनकी सार्थकता पुष्टि के लिए टी. परीक्षण किया गया। टी. मान 5.29 प्राप्त हुआ। जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः प्रयोगात्मक समूह की शैक्षिक निष्पति अधिक पाई गई।
- छात्राओं के नियंत्रित समूह का मध्यमान 5.0 तथा प्रमाप विचलन .81 प्राप्त हुआ वहीं प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 5.8 तथा प्रमाप विचलन .81 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के अन्तर की सार्थकता पुश्टि के लिए टी. परीक्षण किया गया। टी. मान 5.55 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक पाया गया। यह प्रयोगाात्मक समूह की शैक्षिक निष्पति अधिक होने की पुष्टि करता है।
- समुदायिक रेडियो शिक्षण की सार्थकता के लिए संयुक्त वर्ग के नियंत्रित समूह का मध्यमान 5.05 तथा प्रमाप विचलन .75 प्राप्त हुआ वहीं प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 5.9 तथा प्रमाप विचलन .81 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के अन्तर की सार्थकता पुष्टि के लिए टी. परीक्षण किया गया। टी. मान 6.53 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक पाया गया। यह प्रयोगाात्मक समूह की शैक्षिक निष्पति अधिक होने की पुष्टि करता है। अतः परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण सार्थक है।

शोध परिणाम व निष्कर्ष

परीक्षण से प्राप्त परिणामों के विश्लेषण व परिकल्पनाओं की जाँच से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पति अधिक होती है।
2. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाली छात्राओं की शैक्षिक निष्पति अधिक होती है।

3. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थी अधिक शैक्षिक निष्पति स्तर दर्शाते हैं।

4. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण सार्थक अन्तर दर्शाता है।

कोई भी अवधारणा परीक्षण परिणामों के आधार पर स्पष्ट होती है। जैसा कि परिकल्पना जाँच एवं निष्कर्ष द्वारा सत्यता की जाँच द्वारा निर्धारित किया गया है। संचार माध्यमों विशेषकर, सामुदायिक रेडियो अपने शैक्षिक प्रभावों को समाहित किये हुए हैं। कक्षा शिक्षण की परम्परागत विधि के पूरक के रूप में सामुदायिक रेडियो शिक्षण को कक्षाओं में अपनाया जाना संभव है। गुरू का महत्व हमेशा रहेगा। फिर भी दूरस्थ शिक्षा, अनौपचारिक व औपचारिक शिक्षा में इसका प्रयोग बड़े स्तर पर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- **ऑबेराय, एस.सी. (2008).** *'शैक्षिक तकनीकी'* न्यू दिल्लीः आर्य बुक डिपो।
- **ओड, एल.के, (1991).** *'शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि',* आगराः आगरा प्रकाशन।
- **कम्यूनिटी रेडियो अवेयरनेस (2011).** 'सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय', भारत सरकार।
- आर. त्यागराजन, *कॉमनवेल्थ एजुकेशन,* न्यू दिल्लीः मीडिया सेंटर फॉर एशिया।
- **डॉ. सत्यदेव (1976).** *'सामाजिक विज्ञानो में शोध प्रवृतियाँ',* चंडीगढः हरियाणा ग्रंथ अकादमी।
- **डेल, एडगर (1987).** *'अध्यापन में श्रव्य–दृश्य साधन,'* हिन्दी संस्करण, चंडीगढः हरियाणा साहित्य अकादमी।
- **कोठारी, सी. आर. (1996).** *'रिसर्च मेथडालॉजी–मेथड्स टेक्नीक्स'*, न्यू दिल्लीः विश्व प्रकाशन।
- **'मुक्त विद्यावाणी' (रेडियो चैनल).** 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान', नई दिल्लीः *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन रिर्सोसेज एंड सोशियल साइंस,* अगस्त 01(09) 78–87.
- http:// world.preess.com/communityRadiobd/
- Htpp:// Community Radio.in/

**** Corresponding Author:***

डॉ0 धर्मपाल सिंह, शोध निर्देशक एवं **श्योप्रकाश**, शोधार्थी

शिक्षा संकाय, ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई) संगरिया

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

Email: spgoswamibodla@gmail.com, Mob. - 9461825177